गडहिंग्लज,

जून 1993

प्र मा ण - प त्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री सुरेखा परशराम शेंडगेजी ने एम्. फिल्. उपाधि के हेतु " **हिमांशु जोशी को कहानियों का अनुशीलन** " विषय पर मेरे निर्देशन में काम किया है । आपकी शोध - पद्धति एवं लेखन - विधि से मैं **आद्योपांत** परिचित हूँ ।

मेरी संस्तुति है कि प्रस्तुत प्रबंधिका एम्. फिल्. उपाधि के हेतु प्रस्तुत की जाए ।

डॉ. सुधाकर गोकाककर,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवराज महाविद्यालय,
गडहिंग्लज - 416502
(जि . कोल्हापुर-महाराष्ट्र राज्य)

(डॉ. सुधाकर गोकाककर)

Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur - 416 004.

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

A

प्र स्ता व ना

1) विषय - चयन का उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध - प्रबंध " हिमांशु जोशी की कहानियों का अनुशीलन " एम्. फिल्. का शोध - प्रबंध है । शोध - प्रविधि से परिचय पाना इसका प्राथमिक उद्देश्य है ।

दूसरा उद्देश्य यह है कि हिन्दी साहित्य का भंडार एक समुद्र के समान विस्तृत एवं विशाल है । इसमें अनेक विव्दान लोग कार्यरत हैं । मुझे हिन्दी - साहित्य के प्रति आकर्षण और कुतूहलता है । यही कारण है कि कम - से - कम हिन्दी - साहित्य के एक अंश का तो परिचय हो जाए - इसी जिज्ञासा से इस कार्य की ओर मैं प्रवृत्त हुई ।

तीसरा उद्देश्य नए कहानीकार हिमांशु जोशीजी की कहानियों में चित्रित आधुनिक युगीन - समस्याओं का उद्घाटन करना और इन कहानियों में नई कहानी की विशेषताओं एवं प्रवृत्तियों को देखना रहा है ।

2) कहानी विधा में नई कहानी ही क्यों ? :-

कहानी एक ऐसी विधा है, जो एक क्षण, एक घटना का रोमांचक चित्रण करके उसे जीवन के सर्वोच्च बिंदूपर पहुँचा देती है । यह विधा आधुनिक युग की देन है । आज - कल इस विधा की ओर पाठक आकर्षित हो रहे हैं, जिसके कारण वह अधिक लोकप्रिय होती जा रही है ।

नई कहानी एक जीवनानुभव है; जिसमें नए कहानीकारों ने अपने जीवंत अनुभवों को वाणी दी है । स्वतंत्रता के पश्चात् का युग नई कहानी का है, इस युग में कहानी कल्पित समाधान नहीं देती और पाठक उसे पढ़ना भी पसंद नहीं करता । इस युग के लोगों की प्रवृत्ति में बदलाव आ गया था, वे नवीनता की ओर आकर्षित हो रहे थे । इसी नवीनता की खोज नए कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से की है, जिसमें बहुविध पहलुओं का विस्तार से

विवेचन हुआ है । यही कारण है कि नई कहानी में आधुनिक युग का प्रतिबिंब दृष्टिगोचर होता है ।

नई कहानी को चुनने से पहले नई कहानी की पूर्व की कहानी और नई कहानी के बाद की कहानी पर विचार करना आवश्यक होता है । नई कहानी के पूर्व कहानी को पूर्णरूप देने का श्रेय पहले प्रेमचंदजी को प्राप्त होता है । उन्होंने कहानी को नई दिशा प्रदान की, जिससे कहानी मनोरंजन का साधन न रहकर जीवन की प्रतिच्छाया बन गई । प्रेमचंदजी ने कहानी और जीवन को निकट लाने का प्रयत्न किया है । इनकी कहानियों में समकालीन समस्या का चित्रण हुआ है, जिसमें इनका दृष्टिकोण मानवतावादी, प्रगतिशील एवं उपयोगितावादी रहा है । उन्होंने मानवतावाद से प्रेरित होकर दुनिया को कहानी से जोड़ने का कार्य किया है । प्रेमचंदजी ने अपनी कहानियों में व्यक्ति की अपेक्षा समाज को अधिक महत्व दिया है । उनकी कहानियों में सर्वसामान्य जन - जीवन का वास्तविक चित्रण हुआ है ।

प्रेमचंद के बाद अज्ञेय, जैनेन्द्र और यशपाल का नया दौर आरंभ होता है, जिसमें एक ओर अज्ञेय, जैनेन्द्र ने मनोवैज्ञानिक कहानियाँ लिखीं तो यशपाल ने मार्क्सवाद से प्रेरित होकर कहानियाँ लिखीं । इस दौर में व्यक्ति को अधिक महत्व दिया गया है । इस दौर में स्त्री - पुरुष संबंध का और मानसिक द्वंद्वों का अधिक चित्रण हुआ है, जिससे जटिलता उत्पन्न हुई है।

तद्नंतर स्वतंत्रता के पश्चात् नई कहानी का दौर आरंभ हुआ । इस दौर के कहानीकार स्वतंत्रता के पूर्व पैदा हुए थे, जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के भारत का सपना देखा था, जो यथार्थ के धरातल पर नहीं उतरा, जिससे उनका मन निराशा में डूब गया था, वे हतोत्साहित हो गये थे; क्योंकि उन्होंने देश की स्वतंत्रता को विभाजन में देखा था और उसका परिणाम भी । जैसे मोहन राकेश विभाजन के बाद लाहोर छोड़कर दिल्ली आये थे । विभाजन का दु:ख उन्होंने स्वयं देखा था, जिसकी परिणति " मलबे का मालिक " कहानी में हुई थी । विभाजन पर राकेश तथा उस समय के अन्य लेखकों की कहानियाँ भी दृष्टव्य हैं ।

इस प्रकार नए कहानीकारों ने अपनी अनुभूति की अभिव्यक्ति ही कहानियों में की है । विशेषतः नए कहानीकार मध्यवर्गीय थे, इसलिए उनकी कहानियों में भी मध्यवर्ग की संवेदना अधिक दृष्टिगोचर है । इसमें निराशा, कुंठा, अकेलापन, अजनबीपन आदि प्रवृत्तियाँ हैं ।

स्वतंत्रता के पश्चात् पैदा हुई पीढ़ी में फिर से अलग प्रवृत्ति निर्माण हुई है । इस पीढ़ी के सामने न स्वाधीनता के बाद का सपना था, न सपना भंग होने का दुःख । इसलिए यह पीढ़ी निराश न होकर परिस्थिति का सामना करने की ओर प्रवृत्त हुई । इस पीढ़ी में विद्रोह करने की प्रवृत्ति जागृत हुई । इस स्थिति का या आम - आदमी का विद्रोही रूप आठवें - नववें दशक की कहानियों में देख सकते हैं । इसमें आम - आदमी की भिन्न भावनाओं की पर्ते खोलने का प्रयास हुआ है । इस युग में बड़ी गति के साथ समाज का बदला हुआ चित्र मिलता है ।

इस प्रकार नई कहानी के पूर्व और बाद की कहानियों में परिस्थिति के अनुसार अनेक मोड़ आ गये हैं । परन्तु हिन्दी कहानी में नई कहानी का जो नया मोड आ गया था, वह संक्रमण काल का एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिससे देश में और कहानी में भी एक क्रांतिकारी परिवर्तन आ गया ।

नई कहानी को घुटन, कुंठा एवं नैराश्य आदि से बाँध रखना इस काल की मर्यादा है । नई कहानी जब लिखी गई तब डॉ. नामवर सिंह, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर आदि ने नई कहानी को रेखांकित करने का प्रयास किया है । जिन लोगों नें नई कहानी का आन्दोलन उठाने का काम किया है, उनमें डॉ. नामवर सिंह का नाम पहले आता है । इस आन्दोलन में " नई कहानी " के नामकरण पर अनेक विवाद हुए और नई कहानी जैसा ठोस नाम दूसरा नहीं है, यह भी साबित हुआ ।

नई कहानी एक ऐसी धारा है, जो पुनर्विचार करने के लिए प्रवृत्त करती है । आज तक नई कहानी पर अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए हैं, परन्तु आज इस कहानी की

ओर भावनात्मक रूप से न देखकर निरपेक्षता और तटस्थ वृत्ति से देखकर नई कहानी का मूल्यांकन करना आवश्यक है । यहाँ इस दिशा में कुछ मात्रा में प्रयास है ।

3) हिमांशु जोशीजी ही क्यों ? :-

नई कहानी में विषय, शैली और प्रवृत्तियों में विविधता है । नए कहानीकारों ने विविध विषयों का परिचय अपनी कहानियों के माध्यमसे दिया है । परन्तु नई कहानी कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, निर्मल वर्मा, अमरकान्त, फणीश्वरनाथ " रेणु " आदि के इर्द - गिर्द ही घूमती है । लोग इन मूर्धन्य कहानीकारों को ही नए कहानीकार मानते हैं। वैसे अनेक नए कहानीकारों का उल्लेख नाम मात्र के लिए है । ऐसे अप्रकाशित नए कहानीकारों की लंबी सूची दी जा सकती है । इन कहानीकारों के साहित्य का समग्रता से अध्ययन करना आवश्यक है ।

इन कहानीकारों में हिमांशु जोशीजी का नाम लिया जा सकता है । जोशीजी एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिनकी मानसिकता पहाड़ी जीवन से जुड़ी है और वे महानगर का अनुभव भी ले चुके हैं । जोशीजी ने अपनी कहानियों में स्वतंत्रता के पूर्व और उसके बाद के पहाड़ी जीवन को चित्रित किया है, तो महानगरीय कहानियों में सिर्फ स्वतंत्रता के बाद का चित्रण चित्रित किया है । इनकी कहानियों में परंपरा का आग्रह दिखाई देता है । मार्कण्डेय जैसे लेखक सिर्फ ग्रामीण कहानीकार के रूप में प्रसिध्द हो चुके हैं । जोशीजी ने पहाड़ी और महानगरीय जीवन का चित्रण कर दोनों को जोड़ने का प्रयत्न किया है । एक ओर हिमांशुजी सांस्कृतिक परंपरा से जुड़े है तो दूसरी ओर नई जीवन व्यवस्था से भी जुड़े हैं । इसी कारण ही जोशीजी अन्य कहानीकारों से भिन्न लगते हैं । इसलिए नए कहानीकारों में हमने हिमांशु जोशीजी की कहानियों का अध्ययन करना उचित समझा ।

4) सामग्री - संकलन :-

विषय - चयन के पश्चात् मैं ने विषय से संबंधित समीक्षात्मक ग्रंथों का अध्ययन किया तथा जोशीजी की कृतियों को प्राप्त करने का प्रयास किया । जोशीजी के कहानी - संग्रहों की

प्राप्ती के समय मुझे जोशीजी का पता मिला, जिससे मैं ने उनसे सीधा पत्र - व्यवहार किया, जिसके कारण मुझे अनुसंधान के लिए विपुल सामग्री मिली । जोशीजी से मैं ने पत्रों द्वारा अनेक प्रश्न उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से संबंधित पूछे थे । उन्होंने करीब सात - आठ पत्रों के द्वारा मुझे सामग्री भिजवाई, जिसने शोध - कार्य पूरा होने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । यह सामग्री प्रमाण के लिए परिशिष्ट में दी है ।

5) विषय - प्रतिपादन :-

" हिमांशु जोशी की कहानियों का अनुशीलन " पाँच अध्यायों में विभाजित है :-

1) हिमांशु जोशी का व्यक्तित्व और कृतित्व,
2) नई कहानी और हिमांशु जोशी,
3) हिमांशु जोशी की कहानियों का अनुशीलन,
4) हिमांशु जोशी की कहानियों की विशेषताएँ,
5) सिंहावलोकन ।

1) हिमांशु जोशी का व्यक्तित्व और कृतित्व अध्याय में जन्म और बाल्यकाल, माता - पिता, परिवार, शिक्षा - दीक्षा, नौकरी, बचपन की इच्छाएँ, लेखन, कृतियाँ, कहानी - संग्रह, उपन्यास, कविता - संग्रह, संकलन, यात्रा - वृत्तांत, बाल - साहित्य, संपादित कहानियाँ, पुरस्कार, अनुवाद, अन्य, व्यक्तित्व और कहानीकला और कहानी के बारे में हिमांशु जोशीजी के विचार दिए हैं ।

इस अध्याय में उनके जन्मकाल से लेकर उनकी रचना - प्रक्रिया तक का परिचय दिया गया है । इसमें हिमांशु जोशीजी के व्यक्तित्व के संदर्भ में सामग्री उपलब्ध है । यह प्रामाणिक सामग्री है । जोशीजी ने खुद ही उनके जन्म - काल से आज तक की रचना - प्रक्रिया का परिचय मुझे पत्रों के द्वारा भेज दिया है । इसलिए यह अध्याय उनके जन्म - काल एवं कृतित्व संबंधी प्रामाणिक दस्तावेज है ।

2) " नई कहानी और हिमांशु जोशी " अध्याय नई कहानी के स्वरुप और वैशिष्ट्य का परिचय देता है । इसमें नई कहानीं का स्वरूप, नई कहानी का आविर्भाव काल और नामकरण, नई कहानी की परिभाषाएँ, नई कहानी के नएपन को व्यक्त करनेवाली विशेषताएँ, शिल्प - पक्ष की दृष्टि से नई कहानी की विशेषताएँ, नई कहानी और हिमांशु जोशी आदि मुद्दे हैं । इस अध्याय में शोध - प्रबंध के लिए आवश्यक ऐसी नई कहानी की विशेषताएँ उपलब्ध हैं, क्योंकि जोशीजी की कहानियों का मूल्यांकन इन्हीं विशेषताओं को आधार मानकर किया गया है ।

3) " हिमांशु जोशी की कहानियों का अनुशीलन " इस शोध - प्रबंध का तीसरा और महत्वपूर्ण अध्याय है। इसमें जोशीजी की कहानियों के विषयपर समग्रता से विचार करके महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले गये हैं। इन कहानियों में पहाडी और महानगरीय निम्न मध्यवर्ग की पीड़ा चित्रित है।

इस अध्याय में वर्गीकरण का महत्व बताकर अनेक लेखकों ने जो हिमांशु जोशीजी की कहानियों के वर्गीकरण किये हैं, उन्हें स्पष्ट करके हमने अपना वर्गीकरण ठोस रूप में प्रस्तुत किया है, जिसमें

सामाजिक समस्या,
आर्थिक समस्या,
राजनीतिक समस्या आदि हैं ।

ऐसी तीन मुख्य समस्याओं में जोशीजी की कहानियाँ विभाजित की हैं । सामाजिक समस्याओं से संबंधित कहानियों में और उपभेद किए हैं । इसमें पारिवारिक समस्या, नारी विषयक समस्या, प्रेम विषयक समस्या, नौकरी पेशा औरतों की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, महानगरीय मध्यवर्ग की समस्या आदि आती हैं । इनकी चर्चा के विभिन्न मुद्दे नीचे प्रस्तुत हैं ।

पारिवारिक समस्या में संयुक्त परिवार विषयक, दाम्पत्य विषयक, पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था संबंधी समस्याएँ हैं ।

नारी विषयक समस्या में अविवाहित नारी की समस्या परित्यक्ता नारी की समस्या, विजातीय विवाह की समस्या, विधवा समस्या, पहाड़ी विवाहित नारी की समस्या पर विचार किया है।

प्रेम - विषयक समस्या में अविवाहित और विवाहित नारी का मानसिक प्रेम या आत्मीय प्रेम चित्रित हैं ।

नौकरी पेशा - औरतों की समस्या में शिक्षित, अविवाहित नारी का मानसिक और शारीरिक अत्याचार प्रस्तुत है ।

बेरोजगारी समस्या में शिक्षित पहाड़ी युवकों का और महानगरीय युवती और युवकों का अंतर्द्वंद्व चित्रित है । महानगरीय मध्यवर्ग की समस्या में महागनर के माहौल में आदमी के टूटे रिश्ते, तनाव, अस्तित्वहीनता, अकेलेपन और अंतर्द्वंद्व चित्रित है।

आर्थिक समस्या में अर्थ व्यवस्था के कारण निर्माण हुई परिस्थिति का परिचय देकर जोशीजी की कहानियों में चित्रित अर्थाभाव से निर्मित समस्याओं का अंकन किया गया है । इसमें अर्थ के कारण जोशीजी के नायक या नायिकाएँ तनावग्रस्त, निराश, अजनबी, अपरिचित और घुटन से भरा जीवन बिताते हैं ।

राजनीतिक समस्या में राजनीतिक पध्दति पर विचार किया गया है । इसमें जोशीजी की कहानियों में चित्रित भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था का स्पष्टीकरण किया गया है । इसमें स्वतंत्रता के बाद के स्वार्थलोलुप राजनीतिक नेताओं और व्यवस्था का चित्रण है, उसी प्रकार आम - आदमी के जुल्म का चित्र भी प्रस्तुत है ।

इसमें जनसेवी, स्वतंत्रता - सेनानी द्वारा आम - आदमी की ओर से अन्याय के विरोध में आन्दोलन चित्रित है ।

इसमें राजनीतिक व्यवस्थापर व्यंग्यात्मकता से प्रहार किया गया है । अंत में संदर्भ सूची दी गई है ।

प्रत्येक प्रकार के विवेचन के अंत में संक्षेप में निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं ।

4) चौथा अध्याय में हिमांशु जोशी की कहानियों की विशेषताओं पर विचार हुआ है । इस अध्याय में जोशीजी की कहानियों में वास्तविकता, पहाड़ी - जीवन का चित्रण, नारी विषयक अधिक तर पंरपरावादी दृष्टिकोण, जोशीजी की कहानियों में भ्रष्ट राजनीति का चित्रण, जोशीजी की कहानियों में अन्तर्द्वंद्व, जोशीजी की कहानियों का, शैली - शिल्प और अलग शिल्प की कहानियाँ कुछ उपलब्धियाँ आदि जोशीजी की कहानियों की विशेषताएँ इस अध्याय में चित्रित हैं ।

5) पाँचवा अध्याय " सिंहावलोकन " है, जिसमें जोशीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विचार करके उनके विचार स्पष्ट किये हैं और वर्गीकरण संबंधी कुछ बातें कहकर तीसरे अध्याय पर विचार किया गया है । इस अध्याय में जोशीजी की कहानियों की प्रमुख उपलब्धियाँ बताई गई हैं । उसी प्रकार भविष्य के लिए कुछ निर्देश भी हैं । अंत में निष्कर्ष कहा गया है, इसके बाद संदर्भ सूची दी गई है ।

6) उपलब्धियाँ :-

हिमांशु जोशीजी ने अपनी कहानियों के माध्यम से आधुनिक युगीन समस्याओं को चित्रित किया है, जिसमें आर्थिक परेशानियों से जूझते पहाड़ी और महानगरीय निम्न मध्यवर्गीय लोगों का दु:ख दृष्टिगोचर होता है । जोशीजी की कहानियों में व्यापक रूप से सार्वभौमिक मनुष्यत्व की पीड़ा चित्रित है । इनकी कहानियों में आम - आदमी आक्रोश या गुस्सा नहीं करता बल्कि समझौता परस्त जिंदगी गुजारता है । फिर भी जोशीजी विकास की प्रतीक्षा करते हुए आशावादी स्वर को उठाते हैं । ग्रामीण जीवन पर आधारित आपकी कहानियों में मुख्यत: अर्थ की पीडा और काम - वासना के चित्र प्रस्तुत हुए हैं ।

जोशीजी ने असफल प्रेम कहानियों में आत्मीय संबंधो को महत्व देकर मानसिक स्थिति का चित्रण किया है, जिसमें शारीरिक आकर्षण के स्थान पर मानसिक प्रेम की अभिव्यक्ति की है ।

I

जोशीजी की कहानियाँ सत्य पर अधिक टिकी हुई है । इनकी कहानियों की मुख्य विशेषताएँ संवेदनाओं की तीव्रता, अनुभूति की प्रामाणिकता, वास्तविकता का दर्शन, नारी की वेदना, बेरोजगारी की पीड़ा, टूटते हुए दाम्पत्य जीवन के प्रति चिंता, मध्यवर्गीय मूल्यों का ह्रास, आम-आदमी का दुःख, जाने - पहचाने पात्र, सीधी सरल भाषा और राजनीतिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश आदि हैं । इनकी कहानियों में अंतर्द्वंद्व, अकेलापन, घुटन, निराशा और भयभीतता चित्रित है ।

नए कहानीकार हिमांशु जोशीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अभी तक शोध कार्य नहीं हुआ है । प्रस्तुत शोध - प्रबंध में जोशीजी की कहानियों के माध्यम से नई कहानी की मुख्य विशेषताओं को खोजने का प्रयास किया गया है । उसी प्रकार नई कहानी की शिल्पगत विशेषताएँ - जैसे सांकेतिकता, व्यंग्यात्मकता, फंतासी, प्रतीक आदि - ढूँढने का प्रयत्न भी रहा है, जो नितांत मौलिक और प्रथम प्रयास है । इसतरह सामाजिक, राजकीय और, आर्थिक समस्याओं के आधार पर किया वर्गीकरण भी मौलिक है । इसलिए यह शोध - प्रबंध प्रामाणिक और मौलिक है ।

इस प्रबंध के अंत में परिशिष्ट दिया गया है । इसमें मेरा बचपन, साक्षात्कार, मेरी रचना - प्रक्रिया लेख और पत्र है । संदर्भ ग्रंथ सूची में लेखक के कथा - संग्रह, कोश, आलोचना ग्रंथ सूची है ।

कृतज्ञता - ज्ञापन :-

सर्वप्रथम मैं अपने आदरणीय गुरुवर डॉ. सु. गो. गोकाककरजी की चिर कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे पुत्री के समान स्नेह दिया और शोध करने में प्रेरणापूर्ण निर्देशन किया, जिसके कारण मैं यह प्रबंध - लेखन पूर्ण कर सकी ।

द्वितीय में मैं आदरणीय लेखक हिमांशु जोशीजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझे प्रबंध - लेखन की सामग्री तो भेज ही दी, उसके साथ - साथ अपना प्रेम और आशीर्वाद भी दिया है और बार - बार पत्र लिखकर मुझे अनुसंधान करने की प्रेरणा भी दी है।

आदरणीय डॉ. वसंतराव मोरेजी हिन्दी - प्रमुख, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझे एम्. फिल्. करने के लिए प्रवृत्त किया ।

एस. एस. आर्टस् कॉलेज और एल. के. खोत कॉलेज के प्राचार्यों का मैं आभार मानती हूँ, जिन्होंने मुझे कॉलेज के वक्त में अनुसंधान करने की प्रेरणा दी । .

शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर का खर्डेकर पुस्तकालय, एस. एस. आर्टस् कॉलेज, संकेश्वर लायब्ररी - विभाग, एल. के. खोत कॉमर्स कॉलेज, संकेश्वर, लायब्ररी - विभाग आदि की मैं आभारी हूँ, जिन्होंने आवश्यकता के अनुसार मेरी सहायता की है ।

परीवार में माता, भाई और बहनों ने जो सहयोग दिया हे उनके प्रति मैं ऋणी हूँ, उसी के साथ प्रा. शोभा नाईक की भी आभारी हूँ, जिन्होंने प्रबंध की प्रति - लिपि का काम करके मेरा सहयोग दिया है ।

इसके साथ ही इस शोध - प्रबंध को ठीक वक्त पर टाईप करके मुझे सहयोग दिया उस टंखलेखक श्री. प्रविण वाडकर (वाडकर्स टाईपरायटिंग इन्स्ट्रीटूट अॅण्ड झेरॉक्स सेंटर, निपाणी, जिल्हा बेलगाँम्,) का भी मैं आभार मानती हूँ ।

संकेश्वर
जून १९९३

(सुरेखा प. शेंडगे)